"बेल्ट" एंड रोड इनिशिएटिव **(BRI)** और भारत के रणनीतिक विकल्प: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

डॉ0 जसवेन्द्र सिंह

एसोसिएट प्रोफेसेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

जी0वी0एन0 डिग्री कॉलेज बूढ़पुर–रमाला (बागपत)

Email: jasvendrasingh1973@gmail.com

सारांश (ABSTRACT)

भू–राजनीतिक दृष्टि से देखे तो "बेल्ट एंड रोड इंनिशिएटिव (BRI) इस सदी की सबसे प्रमुख वैश्विक संरचना एवं आर्थिक परियोजना है, जो चीन के द्वारा प्रस्तुत की गयी है, जिसका उद्देश्य एशिया ही नहीं बल्कि यूरोप और अफ्रीका के मध्य सम्पर्क, व्यापार और निवेश (पूंजी) को बढ़ाना है और इस पहल के पीछे चीन की सामरिक तथा भू–राजनीतिक महत्वकांक्षाएँ अधिक है।

भारत ने चीन की इस परियोजना (BRI) में शामिल न होने का निर्णय लिया है, जिसका मुख्य कारण है चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) जिसके कारण भारत की सम्प्रभुता और क्षेत्र की अखंडता जुड़ी हुई है। भारत को इन चिन्ताओं के कारण अपने रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

भारत के प्रमुख रणनीतिक विकल्प निम्न है–

1– "एक्ट ईस्ट नीति" जिसके माध्यम से आसियान देशों तथा क्षेत्रीय सम्पर्क को मजबूत करना है।

2– क्वाड जैसे बहुपक्षीय समूहों में भागीदारी बढ़ाना।

3– ईरान के बन्दरगाह (चाबहार पोर्ट) और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारे को अधिक विकसित करना।

4– आर्थिक क्षेत्र और डिजिटल कनेक्टिविटी में अधिक विकास करना।

अतः उपरोक्त विकल्पों को अपनाकर भारत न केवल चीन के बढ़ते राजनीतिक प्रभाव को संतुलित कर सकता है, वरन दक्षिण एशिया सहित हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में एक स्थायी शान्ति भी कायम कर सकता है।

इस प्रकार भारत के लिए (BRI) केवल एक चुनौती नहीं, वरन अपने रणनीतिक कौशल को बढ़ाने का और विश्व के स्तर पर भारत के नेतृत्व करने का अवसर भी बन चुका है।

की वर्ड – सार्वभौमिक, सम्प्रभुता, संपर्क परियोजनाएँ, भू रणनीतिक स्पर्धा, दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन, आर्थिक कूटनीति, क्वाड सहयोग, चाबहार बन्दरगाह, इण्डो पैसिफिक रणनीति, क्षेत्रीय सम्पर्क, चीन पाकिस्तान इकानोमिक कोरिडोर, एक्ट ईस्ट नीति

प्रस्तावना–

भूमण्डलीकरण के इस दौर में बुनियादी ढाँचा आधारित सम्पर्क किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति को रणनीतिक रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव को वर्ष 2013 में चीन द्वारा इसकी घोषणा कर इसे एक वृहद रणनीतिक परियोजना के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है, यह परियोजना न केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित है बल्कि चीन ने इसे विश्व स्तर पर शक्ति प्रतिस्पर्धा के स्तर तक पहुँचा दिया है।

इस स्थिति में भारत की भौगोलिक तथा इंडो–पैसिफिक की रणनीतिक स्थिति तथा चीन के साथ बढती भारत की शक्ति प्रतिस्पर्धा के साथ BRI हमारे देश के लिए एक चुनौती के रूप में महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के कार्य और उसका उद्देश्यः

BRI मुख्यतः दो प्रकार से कार्य करता है–

. एक भूमि के आधार पर कोरिडोर बनाया जाये जो एशिया रूस तथा यूरोप तक जाता है। इसका चीन ने नाम दिया है सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट (SREB)। यह प्राचीन समय में भी चीन का महत्वपूर्ण आर्थिक कोरिडोर रहा है।

. दूसरा है समुद्री मार्ग जो की कई महासागर को जोडता है जैसे दक्षिण चीन सागर, हिन्द महासागर, अफ्रीका तथा भूमध्यसागर प्रमुख है। इसे चीन का इस सदी का समुद्री सिल्क रोड (MSR) कहते है।

इन मार्गो का मुख्य उद्देश्य विश्व में अपने नेतृत्व को मजबूत करना अर्थात चीन विश्व में अपनी भूमिका एक नेतृत्व के तौर पर मजबूत करना चाहता है।

विश्व के अधिकतर भूमि तथा समुद्री व्यापार मार्गो पर अपना प्रभाव बढाना उसका उद्देश्य है।

तीसरा चीन का उद्देश्य अपनी उर्जा आपूर्ति तथा संसाधनों तक पहुँच बढाना है। इसके अतिरिक्त रणनीतिक साझेदारियॉ बढाकर औद्योगिक क्षमता का निर्यात करना भी है।

भारत की बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव पर स्थिति तथा चुनौतियाँः

सबसे पहले तो भारत को इस बात पर आपत्ति है कि चीन भारत की सम्प्रभुता का उल्लंघन करता है, चीन पाकिस्तान इकोनिक कोरिडोर बनाकर, क्योंकि इस कोरिडोर का हिस्सा पाक–अधिकृत कश्मीर POK से होकर जाता है। इसी प्रमुख कारण की वजह से भारत ने BRI में भाग न लेने का निर्णय लिया।

दूसरा बडा कारण है चीन की रणनीतिक उपस्थिति इसके तहत चीन भारत के आसपास बन्दरगाहों, रेलवे औद्योगिक पार्को तथा समुद्री मार्गो में BRI के माध्यम से निवेश कर भारत के लिए एक चुनौती बन सकता है।

उदाहरण के लिए पाकिस्तान का ग्वादर बन्दरगाह, श्रीलंका का हम्बनटोटा, बांग्लादेश का चिटगाँव तथा म्याँमार का कीओकफ्यू जैसे स्थान विकसित कर रहा है इसे कुछ रक्षा विशेषज्ञ “String of Pearls” रणनीतिक साझेदारी का भाग मानते है।

तीसरा कारण चीन का उच्च ऋण–जाल की कूटनीति जिसमें कई देश जैसे श्रीलंका, लाओस सहित अनेक देशो के उदाहरण है जो बताते है कि चीन की उच्च ब्याज दर लम्बे समय में आर्थिक निर्भरता बढाते है। इससे भारत के एक अन्दर एक सन्देह है कि इस उच्च ऋण का प्रभाव पडोसी देशों में शक्ति–संतुलन को प्रभावित कर सकता है।

चौथा प्रमुख कारण है दक्षिण एशिया में उसकी तेज रफ्तार आर्थिक और राजनीतिक प्रढाव को बढाना जिससे भारत की ‘एक्ट ईस्ट नीति’ अर्थात ‘नेबरहुड फर्स्ट’ नीति के सामने अनेक चुनौतियाँ पैदा हो रही है।

बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव BRI के भूमण्डलीकरण तथा क्षेत्रीय प्रभावः

BRI के कारण दक्षिण एशिया में शक्ति सन्तुलन पर बहुत अधिक प्रभाव पडा है, इसके प्रभाव के कारण भारत के पडोसी राष्ट्रों जिनमें प्रमुख भारत के पडोसी राष्ट्रों जिनमें प्रमुख पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल जैसे देशों के साथ चीन ने साझेदारी को बेहद मजबूत किया है। इसलिए BRI के कारण भारत के क्षेत्रीय प्रभाव खासतौर पर दक्षिण एशिया में सीधी चुनौती मिली है।

भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में जल मार्गो पर BRI के माध्यम से चीन का नियंत्रण बढ सकता है, जिसके कारण आने वाले समय में भारत, जापान, आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका के रणनीतिक और सामरिक हितों पर कुठाराघात की सम्भावना है।

बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव के द्वारा चीन अंतराष्ट्रीय संस्थानों में अपनी भूमिका बढाने तथा वैकल्पिक शासन मॉडल को विकसित करने की उसकी मंशा है, जिसके कारण भारत के रणनीतिक हित प्रभावित होंगें।

भारत के रणनीतिक विकल्पः

BRI के माध्यम से चीन ने भारत के सामने एक चुनौती जरूर पेश की है, परन्तु भारत ने भी BRI का विकल्प ढूँढने के लिए बहुपक्षीय तथा द्विपक्षीय दोनो के स्तर पर योजनाएँ तैयार की है। जिनमें कुछ प्रमुख विकल्प अथवा योजनाएँ निम्न है–

भारत 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के तहत दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ 'नेबरहुड फर्स्ट' के माध्यम से संपर्क और सहयोग बढा रहा है, साथ ही 'इंडो–पैसिफिक विजन' के माध्यम से जापान, आस्ट्रेलिया, कोरिया, अमेरिका के साथ–साथ आसियान के राष्ट्रों के बीच बेहतर संपर्क व सहयोग बढा रहा है।

इसके अतिरिक्त भारत–जापन एक्ट ईस्ट फोरम, उत्तर पूर्व भारत में कनेक्टिविटी परियोजनाएँ तथा क्वाड के माध्यम से मुक्त और सुलभ इंडो–पैसिफिक योजनाओं के माध्यम से एक सशक्त रणनीतिक विकल्प बनाया है।

दूसरे प्रमुख रणनीतिक विकल्प के रूप में भारत ने जापान के साथ मिलकर बी आर आई के विरूद्ध 'एशिया–अफ्रीका ग्रोथ कोरिडोर' (AAGC) के निर्माण की घोषणा की है। जिसका प्रमुख उद्देश्य अफ्रीकी राष्ट्रों के मध्य ढाँचागत निर्माण करना, साथ ही डिजिटल नेटवर्क बढाकर तथा साथ ही भारत–जापान–अफ्रीका त्रिकोणीय साझेदारी और सहयोग बढाना प्रमुख उद्देश्य है।

तीसरे विकल्प के रूप में G 20 शिखर सम्मेलन में घोषित "India-Middle East- Europe Economic Corridor (IMEC) भारत का एक मुख्य रणनीतिक और सहयोगी विकल्प माना जा रहा है जिसके द्वारा भारत के पक्ष में निम्नलिखित तर्क है–

भारत Gulf-Europe व्यापार एकीकरण परियोजनाएँ, उर्जा सम्बन्धित सुरक्षा, डिजिटल कनक्टिविटी को बढाना तथा रेल–समुद्री कनेक्टिविटी को बढाकर, चीन के बी आर आई की शक्ति को सन्तुलित करना है।

चीन की बी आर आई के विकल्प के रूप में चौथा प्रमुख विकल्प भारत द्वारा ईरान में शुरू की गई 'चाबहार पोर्ट' और साथ में इंटरनेशनल नार्थ–साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर है ये सारी परियोजनाएँ भारत, ईरान, रूस और मध्य एशिया को जोडती है। इसके पक्ष के कुछ निम्नलिखित तर्क है– इन परियोजनाओं के माध्यम से भारत को अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया तक सीधी पहुँच प्राप्त होगी। साथ ही रूस और यूरोप तक विकल्प के तौर व्यापार मार्ग खुलेगा, और पाकिस्तान की भौगोलिक जमीनी व समुद्री बाधाओं को पार करने का साधन बना।

पाँचवे विकल्प के तौर पर भारत अपने 'नेबरहुड फर्स्ट' और समुद्री साझेदारियॉ व सहयोग के माध्यम से हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी भूमिका मजबूत कर रहा है जैसे सेशल्स, मारीशस, मालदीव राष्ट्रों के साथ रक्षा क्षेत्र में सहयोग, इसी के साथ कोस्टल रडार तथा समुद्री सुरक्षा ढाँचा विकसित करना।

छठे विकल्प के रूप में भारत देश के अन्दर आंतरिक बुनियादी आर्थिक ढाँचा विकसित कर भारत के लिए दीर्घकालिक रणनीति स्तर पर अपनी घरेलू क्षमता बढाकर आर्थिक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर है। दिल्ली, मुंबई औद्योगिक कोरिडोर, भारत माला परियोजना, सागरमाला रणनीतिक परियोजनाए, मेक इन इंडिया तथा निर्यात सम्बन्धी उद्योग विकसित कर चीन के बी आर आई को चुनौती मान उसके सम्मुख एक अच्छे विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है।

सुझाव व निष्कर्ष–

बी आर आई चीन की केवल एक आर्थिक परियोजना ही नहीं वरन एक लम्बे समय तक कार्य करने की रणनीतिक शुरूआत है, जिसके द्वारा चीन विश्व में नेतृत्व तथा भू–राजनीतिक प्रभाव बनाना चाहता है। भारत अपने हितों को ध्यान में रखकर बी आर आई से बाहर रहना चाहता है और ये राष्ट्रीय हित भारत की सम्प्रभुता तथा क्षेत्र की सुरक्षा के अनुरूप है। जैसे बहुपक्षीय और लोकतांत्रिक विश्व की व्यवस्था को बढावा देना, इंडो–पैसिफिक में शक्ति संतुलन बनाना, पडोसी राष्ट्रों के साथ व्यापार और सुरक्षा सहयोग बढाना और अन्त में राष्ट्रों के मध्य स्वतंत्र तथा मुक्त व्यापार एवं जल मार्गों का संरक्षण आदि।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है भारत अपने वैकल्पिक सुरक्षा और रणनीतिक माडल एशिया–अफ्रीका ग्रोथ कोरिडोर, India-Middle East-Europe Economic Corridor, INSTC, एक्ट ईस्ट पॉलिसी तथा इंडो–पैसिफिक सहयोग संगठनों के माध्यम से इन परियोजनाओं को तेज और समयबद्ध रूप से क्रियान्वित करे।

इस प्रकार भारत को BRI को एक चुनौति के रूप में स्वीकार कर एक मजबूत, बहु–ध्रुवीय तथा लोकतांत्रिक विश्व की व्यवस्था का निर्माण करे, तथा ज्योकि लम्बे समय के लिए भारत के रणनीतिक हितों के अनुरूपों, तथा यही बी आर आई के संदर्भ में भारत की विदेश नीति का एक सशक्त विकल्प भी साबित होगा।

सन्दर्भ सूची–

1- Baru, Sanjaya (2020), India and the Indo-Pacific; New Geopolitical Realities.
2- Tellis, Ashley (2019) Strategic Implications of China's Belt and Road Initiative, Cornegie Endowment.
3- Singh, Swaran (2018) BRI and India: Geopolitics of connectivity, Journal of Asian Security.
4- Pant, Harsh V. (2017), The China-Pakistan Economic Corridor and India's Strategic Concers. Observer Research Foundation.
5- Ministry Of External Affairs, Government of India, Official Statements on Belt and Road Initiative.
6- Ministry of External Affairs & JICA. (2017) Asia Africa Growth Corridor Vission Document.
7- विभिन्न समाचार पत्रों सहित इलैक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे आधुनिक साधनों का भी सहयोग लिया गया।